कृषि विभाग– पौधा संरक्षण
पौधा संरक्षण सामयिक सूचना

अंक–11 / 2014–15

वर्तमान समय में तापमान के उतार–चढ़ाव तथा बादल छाये रहने, हो रही बुंदा– बांदी एवं कुहासा जैसे मौसम के कारण किसान भाईयों को अपनी खड़ी फसलों **चना, मटर, मसूर गेहूँ, आलू, सरसों एवं सब्जी** पर खास ध्यान देने की जरूरत है। ऐसे बदले मौसम में फसलों को निम्न कीट–व्याधियों से सुरक्षा आवश्यक है। अतः किसान भाई अपनी फसलों की नियमित निगरानी अवश्य करें।

1. **हरदा रोग**:– इस मौसम में जहाँ तापमान बहुत तेजी से नीचे गिर रहा हो वैसी स्थिति में चना, मटर, मसूर तथा गेहूँ में हरदा रोग के आक्रमण की सम्भावना बनी रहती है। अभी से लेकर फरवरी माह तक इस रोग का प्रकोप हो सकता है। वर्षा के उपरान्त वायुमंडल का तापमान गिरने से इस रोग के आक्रमण एवं प्रसार बढ़ने की सम्भावना अधिक बन जाती है। चना के पौधों (पत्तियों तथा टहनियों) एवं फलियों पर गोलाकार लालीनुमा सफेद भूरे रंग के फफोले बनते हैं। ये फफोले बाद में काले हो जाते है। मसूर में भी इसी प्रकार के फफोले बनते है जो अंत में पौधों को सूखा देते है। मटर में भी इसी प्रकार के फफोले बनकर तना को विकृत कर देते हैं, तथा अन्त में पौधा सूख जाता है।

प्रबंधन :– वैसे तो यह रोग पौधों में हर वर्ष नही होता, परन्तु पौधों में इस रोग के आक्रमण के बारे में तब पता चलता है जब फफूँद प्रजननावस्था में आ जाता है। इसलिए आकान्त अवस्था में छिड़काव लाभप्रद नहीं हो पाता है। इस रोग के लिए अनुकूल वातावरण बनते ही सुरक्षात्मक उपाय करना समझदारी भरा कदम होगा।

I. बुआई के समय रोग रोधी किस्मों का किसान भाई चयन करें।

II. बुआई के पूर्व कार्बनडेजिम 50% घु0 चू0 2 ग्राम अथवा जैविक फफूँदनाशी ट्राइकोडरमा 5 ग्राम से प्रति कि0 ग्रा0 बीज का बीजोपचार अवश्य करें। बिना बीजोपचार किये बीज नही गिरावें।

III. खड़ी फसल में फफूँद के उपयुक्त वातावरण बनते ही मैंकोजेब 75% घु0 चू0 का 2 कि0 ग्रा0 या, कॉपर ऑक्सीक्लोराईड का 3 कि0 ग्रा0 प्रति हेक्टयर की दर से छिड़काव करें।

2. **स्टेमफिलियम ब्लाईट रोग** :– यह रोग मुख्यतः चना एवं मसूर में लगने वाला एक प्रमुख रोग है। **स्टेमफिलियम सरसिनिफर्मी** नामक फफूँद इसका कारक है जिससे रोग होता है। पत्तियों पर बहुत छोटे भूरे –काले रंग के धब्वे बनते है। पहले पौधों के नीचली भाग की पत्तियाँ आक्रांत हो कर झड़ती है और उपरी भाग पर फैलती जाती है। रोग खेत में एक स्थान से शुरू होकर धीरे–धीरे चारो ओर फैलती है। तीव्र आक्रमण होने पर पत्तियाँ झड़ जाती है और फसल की भारी क्षति हो जाती है। पौधों की ज्यादा वानस्पतिक वृद्धि, अधिक आर्द्रता तथा तापमान 15–20 डिग्री से0 का रहना इस बीमारी की वृद्धि का कारण होता है। फसल में यह रोग प्रतिवर्ष नहीं आता है।

प्रबंधन :–

I. उपर्युक्त वातावरण बनने पर चौकन्ना रहें। तथा शुरू में ही आकान्त पौधों को खेत से निकालकर नष्ट कर दें /जला दें।

II. अनुशंसित फफूँदनाशी से बुआई पूर्व बीजोपचार अवश्य करें।

III. उपर्युक्त वातावरण बनते ही मैकोंजेब 75% घु0 चू0 का 2 कि0 ग्रा0 या कॉपर ऑक्सी क्लोराइड 50% घु0 चू0 का 3 कि0 ग्रा0 प्रति हेक्टेयर की दर से सुरक्षात्मक छिड़काव करनी चाहिए।

3. **अल्टरनेरिया ब्लाईट** :– यह गेहूँ का एक प्रमुख रोग है। इस रोग का मुख्य कारक **अल्टरनेरिया ट्रीट्रीसाई** नामक फफूँद होता है। इस रोग के लगने पर पत्तियों पर अनियमिताकार धब्वे बनते है जो बाद में पीला पड़कर किनारे में झुलसती है।

नियंत्रण :– इस रोग के नियंत्रण के लिए मैकोजेब 75% घु0 चू0 2 कि0 ग्रा0 या ताम्र जनित फफूँदनाशी कॉपर आक्सीक्लोराईड 50% घु0 चू0 3 कि0 ग्रा0 प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।